ई-संस्करण, अंक 12

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

गपशप

नमस्कार,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं हम सभी लॉकडाउन में हैं और अपने–अपने घर पर हैं, हमने सोचा कि अपने नियमित समाचार पत्र गपशप का ई–संस्करण लाया जाए। हम आपको लॉकडाउन की इस अवधि के दौरान समय–समय पर इस तरह के ई–गपशप भेजते रहेंगे। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। आप इसे अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और आपके अनुसार जिन्हें भी इन लेखों को पढ़ने में मज़ा आए उनके साथ साझा कर सकते हैं।
घर पर रहें। सुरक्षित रहें।

आपकी चुलबुली और बुलबुली

चुप न रहें, ज़रूर कहें!

स्पर्श के नियम

मेरी प्यारी सहेलियों मुसीबत के समय हमें साहस से काम लेना चाहिए और डट कर उसका सामना करना चाहिए। अब मेरी बातें ध्यान से सुनो!

हमारे शरीर के कुछ प्राइवेट अंग होते हैं जिनको कपड़ों से ढक कर रखते हैं। इनको हम साफ–सफाई के लिए छूते हैं। अगर कोई व्यक्ति इनको छूता है या इनके साथ छेड़छाड़ करता है तो वह असुरक्षित स्पर्श है। वह व्यक्ति गलत कर रहा है उसे रोकना चाहिए। स्पर्श 3 तरीके के होते हैं:–

पहला है सुरक्षित स्पर्श जो हमें अच्छा लगता है जब मम्मी पापा हमें प्यार करते हैं और ज़रूरत पड़ने पर साफ सफाई के लिए छूते हैं।

दूसरा है असुरक्षित स्पर्श जो हमारे लिए नुकसानदेह है जिसको रोकना होता है और क्योंकि यह हमारी भावनाओं को चोट पहुँचाता है।

तीसरा है अजीब स्पर्श यह ऐसा स्पर्श है जो समझ में नहीं आता कि सही है या ग़लत है। जिस से डर लगता है घबराहट होती है और बेचैनी होती है।

एक ज़रूरी बात सुनो, अगर कोई इस तरीके का असुरक्षित स्पर्श तुम्हारे साथ करता है या अजीब व्यवहार करता है तो उसको वही रोकना है और नहीं कहना है और भाग जाना है। सबसे ज़रूरी बात जो तुम्हें ध्यान रखनी है– अगर कोई तुम्हारे साथ ऐसा असुरक्षित स्पर्श करता है तो तुम्हें रोकना है और अपने बड़ों को ज़रूर बताना है ताकि हम इसे रोक सकें।

आओ सहेली-बूझो पहेली!

1. बूझो सहेली एक पहेली, जब भी काटो तो निकले नई नवेली।
2. रंग है मेरा काला, उजाले में दिखाई देती हूँ अँधेरे में छिप जाती हूँ।
3. पैर नहीं फिर भी चलती है बताओ क्या ?
4. सुबह सुबह ही आता हूँ
दुनिया की खबरें लाता हूँ
सबको रहता मेरा इंतजार
हर कोई करता मुझसे प्यार।
5. ना मुझे इंजन की जरूरत ना मुझे पेट्रोल की जरुरत जल्दी जल्दी पैर चलाओ मंजिल अपनी पहुँच जाओ।
6. ना किसी से किया झगड़ा
ना कभी करी लड़ाई
फिर भी होती रोज पिटाई।